महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का नागरिक समाज अभिनन्दन समारोह में भाषण

स्थान :- मेरठ दिनांक :- 24 दिसम्बर, 2011 समय :- अपरान्ह 12 बजे

उपस्थित सज्जनों,

आपके बीच आकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। सामाजिक सम्बन्धों के दायरे समाप्त करके एक समतापूर्ण समाज का निर्माण करना ही हम सभी नागरिकों का कर्तव्य है। व्यक्ति, परिवार और अन्ततः समाज के उत्थान और विकास का पुरातन सिद्धान्त आधुनिकता के दौर में भी पर्याप्त रूप से प्रभावी है। आपसी सम्पर्कों के माध्य से ही व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सम्भव है। देश की उन्नति का मार्ग भी इसी पथ से जुड़ा हुआ है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत व उसके नागरिकों की संभावनाएं अपार हैं। हमारा देश एक विकासशील राष्ट्र है। परन्तु वास्तविकता यह है कि आज विश्व के विकसित देश हमारे देश से सम्पर्क जोड़ने को लालायित हैं। यह सम्पर्क आर्थिक आधार पर भले आश्रित हो, परन्तु सांस्कृतिक सम्पर्कों में इसका प्रभाव अब निरंतर बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियों और विभिन्न अवसादों से लड़कर भी आज का भारतीय समाज अगर प्रगति करने को तत्पर है। इसका श्रेय उस भारतीय प्रणाली को दिया जाना चाहिए, जिसके हम और आप सारे लोग सदस्य हैं।

बुराइयाँ या कमियां हर प्रणाली का अनिवार्य अंग हैं क्योंकि तभी व्यवस्था को सुधार के मार्ग से प्रगतिशील बनाए रखा जा सकता है। भारत, जो अनेकों धर्म और जातियों का विलक्षण संयोग है, वास्तव में अपने निवासियों के कारण ही एक राष्ट्र बना है। जैसे-जैसे भारत का प्रत्येक नागरिक स्वयं को सबल समझता चलेगा, वैसे-वैसे राष्ट्र सबल दिखने लगेगा। निजी सैन्य क्षमता या आर्थिक संसाधन उस स्थिति में किसी काम नहीं आते, जब मानव संसाधन सबल न हो। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने इस सत्य को उसी समय व्यक्त कर दिया था, जब उन्होंने समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति को सशक्त बनाने का मंत्र दिया था।

इस प्रकार के नागरिक अभिनन्दन समारोह वास्तव में संविधान में वर्णित उसी भावना का एक सूक्ष्म उदाहरण हैं जो हमें व्यक्ति की गरिमा का आदर करना सिखाती है। व्यक्ति केवल मतदाता नहीं होता, वह एक स्वतंत्र मत भी होता है। यद्यपि लोकतांत्रिक व्यवस्था में अंतिम व्यक्ति का विचार भी महत्वपूर्ण होता है तथापि प्रणालीगत कुछ खामियों के कारण वर्तमान में संख्या बल महत्वपूर्ण हो गया है। देश में कुछ ज्वलंत प्रश्नों को लेकर आज जो अजीब सी सक्रियता है, यह काफी कुछ बयान करती है। कहीं न कहीं सभी विरोधी विचार उसी समान लक्ष्य की ओर इशारा करते हैं, जिसके केन्द्र में व्यक्ति का कल्याण है। आवश्यकता केवल उस लक्ष्य को आत्मसात करके उस तक पहुंचाने के सबसे अच्छे तरीके के चुनाव की है। अगर गांधी जी दशकों पूर्व इस प्रणाली पर विश्वास कर सकते थे तो उनक मार्ग परचलने का दावा करने वाले हम क्यों नहीं ? यह बहुत कठिन तो नही कि हम धीरे-धीरे ही सही, या दूसरे पर विश्वास करके एक-दूसरे को समझें और फिर एक-दूसरे का भेद समाप्त करें। यह हम सभी का कर्तव्य है कि जिस व्यवहार की आशा हम दूसरों से अपने लिए करें, वहीं व्यवहार हम उसके प्रति करें। तभी हम अपनी और

इस समाज की अस्मिता को समझ पाएंगे और तभी इस देश व समाज के दुःख को सामुहिक प्रयत्नों से दूर कर पाएंगे।

जयहिन्द।